www.bhagyamanthan.in

।। हनुमान चालीसा ।।

www.bhagyamanthan.in

।। जय श्री गणेश ।।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभं।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि बिघा देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

www.bhagyamanthan.in

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बलधामा।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन विराज सुवेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
कांधे मूँज जनेऊ साजै।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जगबन्दन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।

www.bhagyamanthan.in

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाए।
श्री रघुबीर हरषि उर लाए।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तम्हरो यश गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहिसा।।

www.bhagyamanthan.in

जम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हांक ते कांपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै।।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहां जन्म हरि भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेई सर्व सुख करई।।

www.bhagyamanthan.in

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गौसाई।
कृपा करहु गुरूदेव की नाई।।
जो शत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय में डेरा।।

www.bhagyamanthan.in

।।दोहा।।

पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रुप।
रामलखन सीता सहित, ह्रदय बसहु सुर भूप।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपैं।
रोग-दोष जाके निकट न झांकें।।
अंजनिपुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सिया सुधि लाए।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुन बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे।
लाय संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जमकारे।
अहिरावन की भुजा उखारे।।

www.bhagyamanthan.in

बाएं भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरति करत अंजन माई।।
जो हनुमान जी की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई।
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

Guru Rahuleshwar

Address: LG-12, Shatabadi Vihar, Near Hanuman Mandir
Sector-49, Noida-201301
Email: bhagyamanthan@gmail.com
www.bhagyamanthan.in